करौली की कहानी

बंदूक छोड़, बूंदों से भरी उम्मीदें

राजस्थान के करौली जिले में कभी डकैतों का बोलबाला था। सूखे और पानी की कमी ने खेती को बर्बाद कर दिया था, जिससे पुरुष डाकू बनने को मजबूर हो गए थे। संपत्ति देवी के पति जगदीश भी उन्हीं में से एक थे। लेकिन संपत्ति देवी ने हार नहीं मानी। उन्होंने अपने पति को दस्यु जीवन छोड़ने और पानी संरक्षण के लिए प्रेरित किया। तरुण भारत संघ (टीबीएस) की मदद से उन्होंने पुराने तालाबों को पुनर्जीवित किया और नए पोखर बनाए। आज करौली में पानी की कमी दूर हो गई है, खेती लहलहा रही है और लोगों के जीवन में खुशहाली आई है। पानी के संरक्षण से न केवल जीवन बदला है, बल्कि नदियां भी पुनर्जीवित हो गई हैं। करौली के लोगों ने साबित किया है कि सामूहिक प्रयासों से बड़े बदलाव लाए जा सकते हैं।

722.1

मिमी थी करौली जिले में 1951-2000 तक औसत वार्षिक वर्षा, जो 2001-2011 में घटकर 563.94 मिमी हो गई।

16 पोखर

बनाए गए हैं करौली जिले के एक गांव के आसपास के जंगल में, जिससे पानी की कमी दूर हुई है।

40 साल पहले पूरी तरह से सूख गई थी सेर्नी नदी, लेकिन अब पानी के संरक्षण के प्रयासों से नदी में पूरे साल पानी रहता है।

संपत्ति देवी ने शुरू की थी यह पहल

Photos: PTI

500+ पोखर

बनाए गए हैं करौली जिले में, जिससे पानी के संरक्षण में मदद मिली है।

₹1,00,000

से अधिक की आय होती है संपत्ति देवी को हर साल पोखर से, जिसमें वे पानी चेस्टनट की खेती करती हैं।

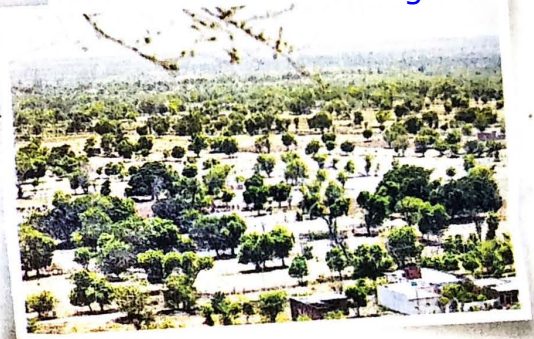

nwda.gov.in